# कथा क्रम

कथा साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

अप्रैल–जून 2022

मूल्य – ₹ 40

Myra, 7 Years
Naperville US

# विनम्र श्रद्धांजलि

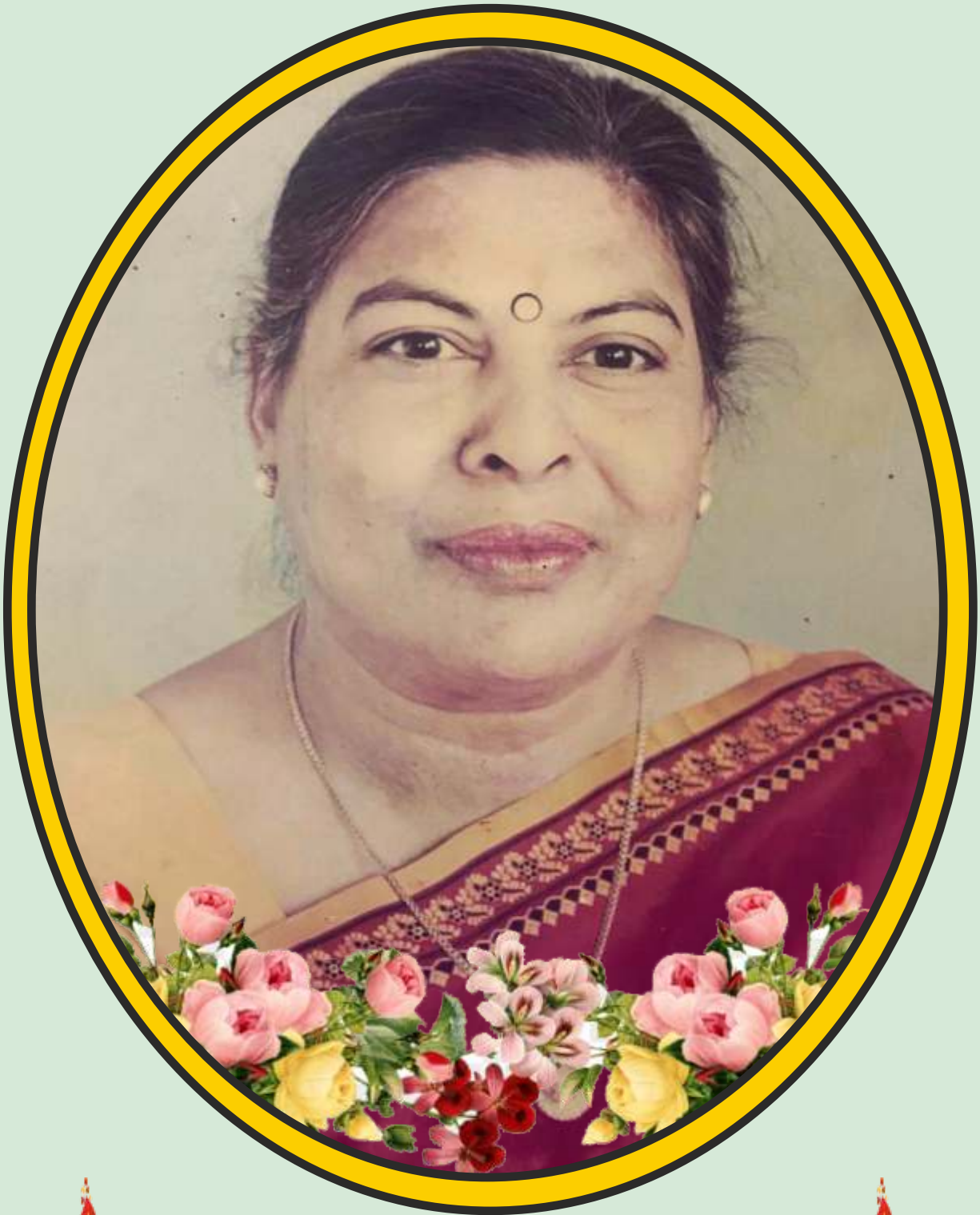

डॉ. (श्रीमती) पूनम सागर

(02.03.1952-20.03.2022)

प्रकाशक, कथाक्रम

ISSN-2231-2161

# कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 24 अंक : 92

अप्रैल-जून 2022

(केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा से सहयोग प्राप्त)

## कहानियां

13 **सैली बलजीत** : कोई भी नहीं....
17 **डॉ. रमाकान्त शर्मा** : मोना डार्लिंग
21 **निशिरंजन ठाकुर** : अपूर्ण
25 **हंसा दीप** : उल्का पिंड
55 **डॉ. दीर्घ नारायण** : कुज्जू की क्रांति
61 **मनीष कुमार सिंह** : समयानुसार
66 **डॉ. रंजना जायसवाल** : उस तरह की औरतें
70 **डॉ. ज़ाकिर फ़ैज़ी** : टी ओ डी
74 **हरजीत अटवाल** : मस्त
अनुवाद-सुभाष नीरव

## लघुकथाएं

16 **दलजीत कौर** : घर
60 **समीर उपाध्याय** : तर्पण
65 **हरभगवान चावला** : हुनर
87 **अशोक भाटिया** : विभाजन : एक, दो

## लेख

09 **मधुरेश** : रेणु को समर्पित एक व्यक्ति
29 **विनोद शाही** : हिन्दी उपन्यास का समकाल : एक
37 **कंवल भारती** : प्रेमचन्द विचारक के रूप में

## कविताएं

81 **राम नारायण रमण** : रीतिकाल आया, कविता लिखना, पूजा और पुकार
82 **डॉ. नवीन दवे** : मृत हैं प्रार्थनाएं, बचा हुआ सुख
82 **अभिषेक गुप्ता** : बृहन्नला, अखबार
84 **सुमित दहिया** : वर्णन
85 **आदित्य रहबर** : संगीत, मर्दानगी, जब हम सड़क पर, वे अन्न नहीं उपजाते
86 **अरुण शीतांश** : सांझ, शब्द
86 **खेमकरण 'सोमन'** : कृतज्ञता की तख्ती लेकर

## रंगमंच

88 **सत्यदेव त्रिपाठी** : महिमा उसकी ही रही, जिसका नाम 'हबीब'

## कथा-शोध

99 **गंगा कोइरी** : अस्तित्व संघर्ष से जूझता किसान ('तेरा संगी कोई नहीं')

## समीक्षाएं

103 **विजय बहादुर** : भारत की आत्मा को खोजता एक सार्वभौम अपील का उपन्यास (उपन्यास : विनोद शाही)
106 **डॉ. दया दीक्षित** : उपन्यास 'बा' में कस्तूरबा (उपन्यास : गिरिराज किशोर)
108 **डॉ. कुमारी उर्वशी** : गूंगी रुलाई का कोरस (उपन्यास : रणेन्द्र)
110 **समर बहादुर सिंह** : एक रात की जिंदगी (उपन्यास : मीना गुप्ता)

## स्मृति-शेष

02 **शैलेन्द्र सागर** : जीवनांगिनी
**आवरण** : **मायरा**
**रेखाचित्र** : **संदीप राशिनकर**

**संपादक**
**शैलेन्द्र सागर**
**संपादन सहयोग**
रजनी गुप्त
**सहयोग**
मीनू अवस्थी
**प्रबन्ध सहायक**
राम मूरत यादव
**संपादन संचालन** : अवैतनिक

**संपादकीय सम्पर्क :**
**डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006**
**दूरभाष : 09415243310**
**e-mail : kathakrama@gmail.com**
**e-mail : kathakrama@rediffmail.com**

**इस अंक का मूल्य : 40 ₹**
**सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹**
**संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹**
*(सारे भुगतान **मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट** द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)*
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
**मुद्रक :** प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई. डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

# जीवनांगिनी

जन्म और मृत्यु सृष्टि का शाश्वत विधान है। जिसका धरती पर आर्विभाव हुआ है, उसका अवसान भी निश्चित है। जहां जन्म उल्लास, उमंग और उत्साह का पर्व है, वहीं मृत्यु शोक, वेदना और व्यथा का मर्मान्तिक क्षण. ...। इस अपरिहार्य नियति को भलिभांति जानते हुए भी हम न तो अपने को इस अपूर्णनीय क्षति के लिए तैयार कर पाते हैं और न ही अपने प्रियजन के विछोह की घोर यंत्रणा, अलगाव व एकाकीपन से अपने को निवृत्त या मुक्त....। इस बड़ी भरी दुनिया में हम उस प्रिय के लिए हर पल छटपटाते हैं और कभी बेबस, कभी अवसादग्रस्त तो कभी क्षतविक्षत महसूस करते हैं।

न मनुष्य अथवा रिश्ते एक समान होते हैं, न उनसे जुड़ी भावनाएं और न ही उनका वियोग...। सात दशक का जीवन जीने के बाद हम न जाने ऐसे कितने हादसों से गुजरते हैं। हम माता पिता के वरदहस्त से वंचित होते हैं, कभी भाई बहन या करीबी दोस्त के निधन की असहनीय पीड़ा हमें लंबे अरसे तक संतप्त रखती है। पर जीवनसाथी से अलगाव अन्य सभी दुखों से विलग और अप्रतिम है। लंबी अवधि का सानिध्य, रात दिन की संगति, सुख-दुख, हर्ष-विषाद, सफलताएं-असफलताएं, उपलब्धियां-हताशाएं आदि में सहभागिता कभी जाहिरा तौर पर बहुत मुखर न होते हुए भी संवेदनाओं, भावनाओं और लगाव के धरातल को लगातार पुख्ता करते हुए एक हरहराते लहलहाते वृक्ष की मानिंद दोनों के पूरे वजूद को न सिर्फ अपनी जद में घेर लेती है बल्कि तन-मन, हृदय-मस्तिष्क, चेतन-अवचेतन को पुष्पित, पल्लवित व अभिसिंचित करती है। हैरानी की बात है कि कभी हमें इस अटूट बंधन, गहन भावनात्मक जुड़ाव और इस रिश्ते की विशिष्टता एवं अपरिहार्यता का वैसा अहसास नहीं होता जैसा होना चाहिए। रोजमर्रा के छोटे मोटे विवाद, अनेक मुद्दों पर मतभेद व उससे जनित तनाव, कभी भटकाव और घर परिवार की तमाम समस्याओं के बीच जीवनांगिनी से जुड़ाव की उष्मा कभी पार्श्व में विलीन या अदृश्य अथवा क्षीण हो जाती है। कई बार उसकी रागात्मकता, आत्मीयता एवं स्थायित्व भी प्रश्नांकित होती है। कभी विचलनों का आवेग एकाएक आक्रामक होकर दाम्पत्य की जड़ों को प्रकंपित कर उसे शुष्क व भावहीन बना जाता है। ऐसे भी क्षण आते हैं जब यह रिश्ता गहरे व्यर्थताबोध का अहसास कराता है। कभी अहं का वर्चस्व हमारी संवेदनाओं और भावनाओं को भोथरा कर जाता है और ऐसे कमजोर पलों में कभी अप्रत्याशित तो कभी अनिष्ट घटित होने की संभावना बन जाती है।

चार दशकों से ज्यादा का हमारा संगसाथ एकाएक 20 मार्च 2022 को थम गया। मुझे उसे अस्पताल लाए बमुश्किल 15 घंटे हुए थे। कभी स्वप्न में भी यह नहीं कौंधा कि उसके जीवन को कोई गंभीर खतरा है, न ही डाक्टर ने ऐसा कोई संकेत दिया। मैं तो बेहतर उपचार और सेवा के लिए उसे वहां ले गया था। पर जब छह घंटे बाद उसे वेंटीलेटर पर लेने की सूचना दी गई तब अशुभ की भीषण आशंका ने मेरे अन्तस को उद्विग्न कर दिया। हृदय का स्पंदन हथोड़े की मानिंद कानों में बजना शुरू हो गया। एक-एक पल मेरे मन मस्तिष्क को झिंझोड़ रहा था। सोच समझ कुंद हो गई थी। बार-बार लगता था कि हाथों से जैसे कुछ फिसलता जा रहा है और जितनी ऊर्जा से मैं उसे थामने की कोशिश कर रहा हूं, उतनी ही शक्ति से कोई उसे झपट रहा है।

मेरी आशंका सच साबित हुई। कुछेक घंटों में पूनम की आत्मा का पंछी उसकी देह से पलायन कर गया, वह हमसे दूर और बहुत दूर चली गई, अलंघ्य दूरी...।

..अंत इतनी चुप्पी से और दबे पांव आता है, मुझे कतई आभास नहीं था। और वो भी जाहिरा तौर पर बिना किसी कष्ट या पीड़ा के..।

कुछ देर तक मैं अवसन्न और स्तम्भित पूनम के चेहरे को निरख रहा था। मेरी देह बुरी तरह उद्वेलित थी, पूरे शरीर में भयंकर कंपन था। कांपते हाथों से मैंने उसके हाथों को आखिरी बार पकड़ा था जिसके पहले स्पर्श की अनुभूति पूरी सघनता, सांद्रता और संवेदना के साथ मेरे अंदर रची बसी है। रुदन का गहन गुबार मेरे दिल दिमाग और गले में कांटों की मानिंद बुरी तरह चुभ रहा था। आंखें दग्ध थीं। एकाएक तप्त लावा मेरे अंदर से बहने लगा।

....क्या सब कुछ खत्म..., देह की प्रत्यक्षत: के बावजूद कितना अविश्वसनीय था। वेदना का असहनीय ज्वार मेरे अंग अंग में पीर रहा था। देह और दिमाग के सारे तंतु जड़ और निस्पंद हो गए थे। आईसीयू के उस वार्ड में मुझे सिर्फ और सिर्फ पूनम का चेहरा ही नजर आ रहा था। चारों ओर एकाकीपन और एक अभेद्य सन्नाटा...!

एकाएक अपने को बड़ा दयनीय महसूस करने लगा मैं।

शिखर को वेंटीलेटर की खबर थी। वह चलने की तैयारी में था। अब यह...! कैसे और किन शब्दों में उसे इस क्रूर व भयावह हादसे की सूचना दूं...। सुन्न व जड़ मनोदशा और लड़खड़ाते कदमों से मैं आइसीयू से बाहर आया जहां मेरे मित्र दीपक अपने बेटे के साथ मौजूद थे। मेरी हालत देखकर उन्हें समझने में देर नहीं लगी। उन्हीं के संबल से मैंने शिखर को फोन मिलाया।

'भइया... मम्मी...!' न मेरे मुंह से आगे कोई शब्द निकला और न उसमें और कुछ सुनने का सामर्थ्य था।

हम दोनों ही फूट पड़े थे, नि:शब्द बिलख रहे थे और फिर उधर